समावर्तन

२०११

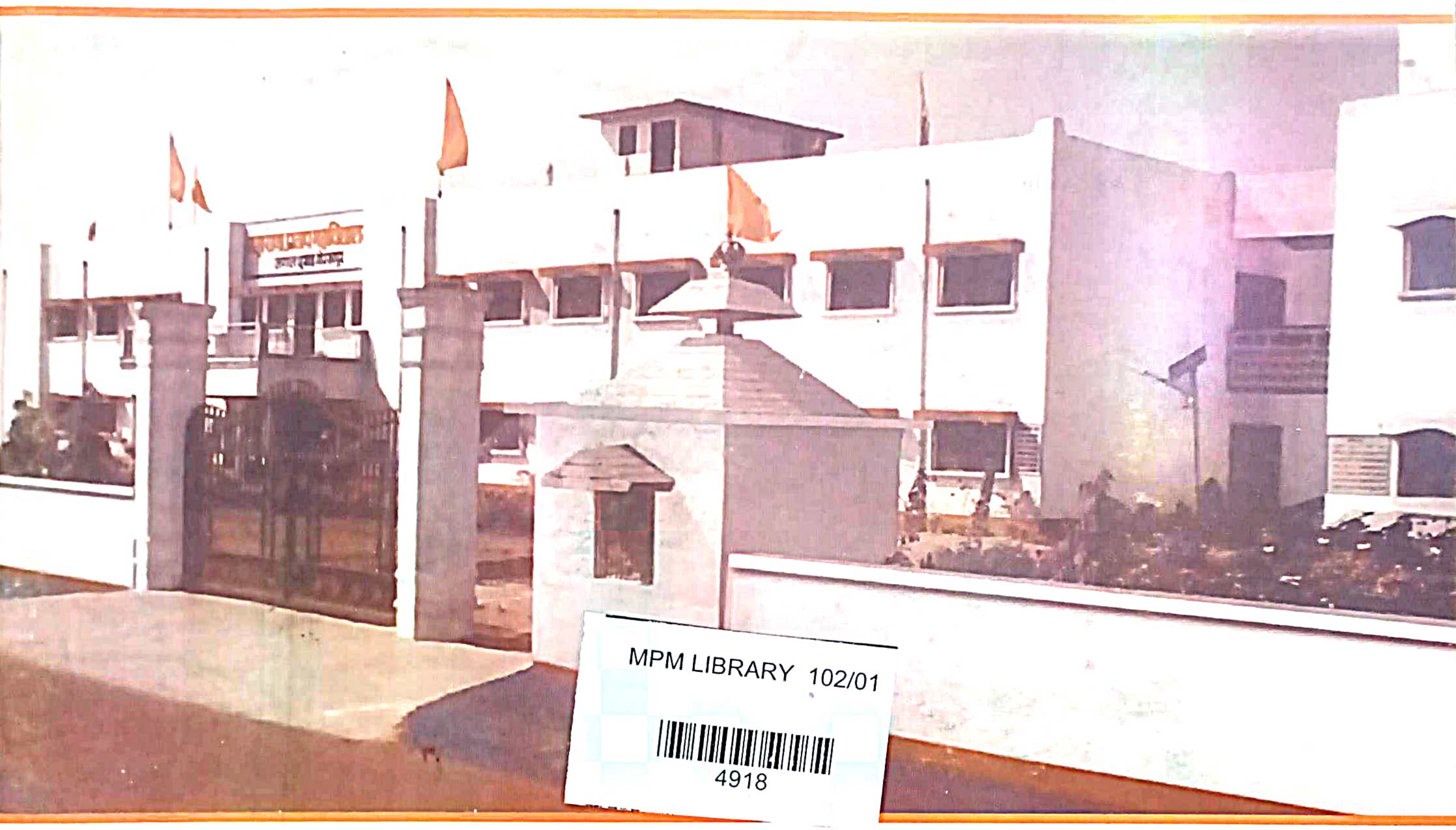

MPM LIBRARY 102/01
4918

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर (उ.प्र.) 273014
ग्रन्थालय
परिग्रहण सं. 4918
आह्वान सं.

गो… एक छोटी सी
शाखा के … स्थित महाराणा
प्रताप स्ना… लय का चौथा
बैच स्नात… यात्रा के अगले
पड़ाव पर … प्त १६८ अब
और ऐसे … भी किंचित
योगदान है … महाविद्यालय
परिसर में … के जीवन पर
क्या प्रभाव पड़ा यह तो समय बतायेगा और वही …

आज का समावर्तन संस्कार समारोह इ… रूप में कैसा विकास चाहते हैं। वर्तमान में भारत की शिक्षित युवा पीढ़ी का अधिकांश हिस्सा भौतिकवादी पाश्चात्य संस्कृति के आकर्षण के दिवा स्वप्न में डूबा हुआ है। सत्तावादी भारतीय राजनीति ने भारतीय धर्म-संस्कृति को साम्प्रदायिकता का चोला पहनाकर उसके वास्तविक स्वरूप पर भ्रम का आवरण चढ़ा दिया है। परिणामतः सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की डोर कमजोर हुई है। परिवार संस्था भी कमजोर हो रही है। गाँव वीरान होते जा रहे हैं। महानगरीकरण के रूप में असन्तुलित विकास का भयावह चित्र सामने है। भ्रष्टाचार, आतंकवाद,अपराध का बढ़ता ग्राफ प्रभावहीन होते भारतीय जीवन-मूल्य के ही सूचक हैं। इस परिस्थिति के निर्माण में शिक्षा की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

किसी भी राष्ट्र का वर्तमान और भविष्य उस देश की शिक्षा प्रणाली और उसके स्वरूप पर निर्भर करता है। डी.एस. कोठारी इसी बात को कह रहे थे कि भारत का भविष्य कक्षाओं में पलता है। किन्तु भारत का दुर्भाग्य है कि आजादी के लगभग छः दशक बाद भी हम मैकाले के भूत से शिक्षा को आजाद नहीं करा पाये। मैकाले द्वारा प्रतिष्ठित शिक्षा नीति आज तक प्रभावी है और उसके उद्देश्य-पाश्चात्य शिक्षा व विचारों के प्रभाव से ऐसे भारतीय पैदा करना जो बौद्धिक दृष्टि से गुलाम हों-को पूरा करने में सफल है। 'धर्मनिरपेक्षता' और 'समाजवाद' के नाम पर भारत की सत्ता देश की युवा पीढ़ी को गुमराह करने वाली शिक्षा पद्धति की ही प्रतिष्ठापक है। किन्तु मैकाले की शिक्षा नीति और स्वतन्त्र भारत के सत्ताधीशों द्वारा शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों की अर्थी सजाने पर छाती पीटते रहने से क्या होने वाला है ? हम अपने प्रयासों से, जितना सम्भव है उनके प्रयासों को, कुछ शिक्षण संस्थानों में ही सही निष्फल कर सकते हैं और भारतीय संस्कृति एवं जीवन-मूल्य के प्रति थोड़े ही समूह में सही, युवाओं में आत्म सम्मान जागृत कर सकते हैं। महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय इसी भूमिका के भगीरथ प्रयास में लगा हुआ है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना परतन्त्र भारत में (१६३२ ई.) गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने उपर्युक्त उद्देश्यों से ही की थी। भारतीय संस्कृति और उसके जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति भारत की युवा पीढ़ी को आकर्षित करने के प्रयास के साथ प्रतिष्ठित एवं विकसित होता हुआ महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं उनकी यशस्वी परम्परा के सपनों को पूरा करने में कहाँ तक सफल है, इसका मूल्यांकन गोरक्षपीठ और समाज करेगा। तथापि 'समावर्तन संस्कार समारोह' हमारे वैचारिक अधिष्ठान का ही हिस्सा है। भारत की राष्ट्रीयता हिन्दुत्त्व एवं हिन्दू जीवन दर्शन के षोडश संस्कारों में 'समावर्तन संस्कार' का मानव जीवन के संस्कारों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज के अवसर पर अपने विद्यार्थियों के यशस्वी जीवन की हार्दिक शुभकामना। मुझे विश्वास है कि हमारे विद्यार्थियों की जीवनयात्रा में महाविद्यालय परिसर का अल्पकालिक यथार्थ किसी न किसी रूप में अवश्य झलकता रहेगा।

तिथि- फाल्गुन, कृष्ण, दशमी, संवत् २०६७
तद्नुसार २७ फरवरी, २०११

(प्रदीप कुमार राव)
प्राचार्य

श्री गोरखनाथ मन्दिर
(0551)
2255453
2255454

Dr. BHOLENDRA SINGH
M.Com. Ph.D.
Ex. - Vice Chancellor
Poorvanchal University
Jaunpur

☎ : (051) - 2256934
Residence :-
A-64, Surajkund Colony
Gorakhpur-273001

गोरक्षपीठाधीश्वर

शुभाशीष

१६३२ में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना गुरूदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के प्रसार हेतु किया था । उन्होंने अपने द्वारा स्थापित 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय' को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री गोविन्द बल्लभ पन्त के आग्रह पर गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु भूमि-भवन एवं अध्यापक-छात्र सहित सरकार को दे दिया। सम्प्रति गोरखपुर विश्वविद्यालय की नींव पड़ी। उसी स्मृति को पुनर्जीवित करते हुए जंगल धूसड़ में 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय' की स्थापना की गई।

यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिमान बनकर उभरा है। इस सत्र से महाविद्यालय द्वारा स्नातकोत्तर कक्षाओं का संचालन बढ़ते कदम का परिचायक है। हमे प्रसन्नता है कि महाविद्यालय का चौथा बैच स्नातक की शिक्षा पूरी कर अपने जीवन के अगले सोपान पर कदम रखने के लिए तैयार है। 'समावर्तन संस्कार' के साथ उन्हें महाविद्यालय परिवार 'विदा' करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अध्ययन के दौरान यहाँ के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के साथ-साथ जो सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन की भी शिक्षा एवं प्रेरणा मिली है, उससे उनका मार्ग प्रशस्त होगा। राष्ट्र और समाज को एक योग्य पीढ़ी प्राप्त होगी। मेरा सभी छात्र-छात्राओं को शुभाशीष एवं इस आयोजन के प्रति हार्दिक शुभकामना।

शुभेच्छु

(महन्त अवेद्यनाथ)
सचिव/ मंत्री, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
अध्यक्ष-प्रबन्ध समिति,
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़

शुभकामना संदेश

गोरक्षपीठ की शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पहल अविस्मरणीय है। १६३२ में ही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना के साथ शिक्षण संस्थानों की जो शृंखला खड़ी हुई, उसमें महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ की स्थापना उच्च शिक्षा में बढ़ते कदम का अगला पड़ाव था। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की इच्छा एवं प्रेरणा से स्थापित यह महाविद्यालय छठवाँ वर्ष पूरा करने जा रहा है। इस सत्र में महाविद्यालय से स्नातक शिक्षा प्राप्त कर चुके चौथे 'बैच' के लिए 'समावर्तन संस्कार' समारोह का आयोजन एक प्रशंसनीय प्रयास है। इस प्रयास की सफलता हेतु मैं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामना एवं धन्यवाद प्रेषित कर रहा हूँ।

(भोलेन्द्र सिंह)
पूर्व, कुलपति
अध्यक्ष-महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर

योगी आदित्यनाथ
संसद सदस्य, लोकसभा
भारत
प्रबन्धक,
महाराणा प्रताप महाविद्यालय,
जंगल धूसड़

शुभकामना संदेश

शिक्षा में गुणवत्ता का गिरता स्तर उच्च शिक्षा के समक्ष एक कड़ी चुनौती बनकर उभरा है। उच्च शिक्षा परिसरों में अराजकता, अपराधियों का बढ़ता प्रभाव, राजनीतिक दलों का सक्रिय हस्तक्षेप और शिक्षा संस्कृति का निरन्तर ह्रास गम्भीर चिंता का विषय है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गुणवत्तायुक्त, युगानुकूल और भारतीय संस्कृति केन्द्रित शिक्षा के प्रसार हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने की थी। उपर्युक्त विषम परिस्थितियों में चुनौती को स्वीकार करते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना २००५ में की गयी। शीघ्र ही इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करायी। पूरे सत्र में १४५ दिन कार्य दिवस, ३० जनवरी तक पाठ्यक्रम पूर्ण कर लेने, सप्ताह में एक दिन की कक्षा छात्र-छात्राओं द्वारा पढ़ाये जाने, प्रार्थना एवं राष्ट्रगीत के साथ महाविद्यालय की प्रतिदिन की दिनचर्या शुरू करने, विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा का आयोजन सप्ताह में एक दिन स्वैच्छिक श्रमदान, जैसे नये-नये प्रयोगों के साथ इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुकरणीय ख्याति अर्जित की है। वर्तमान सत्र से स्नातकोत्तर कक्षाओं का भी अध्ययन प्रारम्भ हुआ है।

छात्रसंघ की संरचना में नया प्रयोग एवं प्रशासनिक व्यवस्था में छात्र सहभाग की योजना प्रशंसनीय है। यदि ये प्रयोग सफल हुये तो निश्चय ही यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक मानक महाविद्यालय के रुप में जाना जायेगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा के साथ संस्कार का प्रयास भी सराहनीय है। 'समावर्तन संस्कार' समारोह का आयोजन भी शिक्षा परिसर में भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना का एक प्रयास है। 'समावर्तन संस्कार' समारोह की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामना।

(योगी आदित्यनाथ)
सह सचिव, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
मंत्री-प्रबन्ध समिति,
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़

प्रो० यू० पी० सिंह
पूर्व कुलपति
वीर बहादुर सिंह
पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर, उ.प्र.

शुभकामना संदेश

गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने १९३२ में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना की। शिक्षा के प्रसार को लोक जागरण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी महाराज ने शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत प्राथमिक से लेकर उच्च एवं प्राविधिक शिक्षण संस्थानों की शृंखला खड़ी की। तत्पश्चात् गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की देख-रेख में शिक्षा के क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा स्थापित तत्कालीन महाराणा प्रताप डिग्री कालेज में १९५५ से १९५८ तक कार्य करने का सुअवसर मिला। महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ की स्थापना शिक्षा परिषद् के इसी बढ़ते क्रम में हुई।

अपने अल्प समय में ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस महाविद्यालय को पर्याप्त यश मिला है। नित नये प्रयोगों, अनुशासन, गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के कारण यह महाविद्यालय प्रशंसित हुआ है। हमें विश्वास है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय भारतीय संस्कृति के विकास का प्रयास जारी रखेगा। महाविद्यालय के चतुर्थ 'समावर्तन संस्कार' समारोह के आयोजन पर महाविद्यालय परिवार को हमारी हार्दिक शुभकामना।

(प्रो. यू.पी. सिंह)
उपाध्यक्ष, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
उपाध्यक्ष-प्रबन्ध समिति,
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़

प्रो. राम अचल सिंह
पूर्व कुलपति
रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
पूर्व अध्यक्ष
उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, उ.प्र.

शुभकामना संदेश

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् गोरखपुर, जनपद गोरखपुर व उसके पास के जनपदों में गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्यनीय अवेद्यनाथ जी व उनके उत्तराधिकारी पूज्यनीय योगी जी के कुशल मार्ग दर्शन के अर्न्तगत लगभग तीन दर्जन शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं का संचालन कर रही है। परिषद् ने महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ की स्थापना छः वर्ष पूर्व किया है। इस महाविद्यालय का चौथा बैच स्नातक तृतीय वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित होने जा रहा है।

महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेते हुए महाविद्यालय में शिक्षण कार्य एवं शिणेत्तर कार्य सम्पादित हो रहा है। महाविद्यालय में पढ़ने वाले बालक व बालिकाओं को यहाँ की मिट्टी व जमीन से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। छात्र-छात्राओं को भारत के इतिहास, संस्कृति, राष्ट्रीय गौरव व राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़ने के लिए महाविद्यालय हमेशा प्रयत्नशील दिखाई देता है। विषय ज्ञान के साथ ही राष्ट्र के प्रति समर्पण व सामाजिक समरसता का पाठ भी विद्यार्थियों को पढ़ाया जा रहा है। महाविद्यालय ऐसे नागरिक तैयार कर रहा है जो अपने राष्ट्र को जानें व समझें। अपने राष्ट्र व वतन के लिए जीने की प्रेरणा ग्रहण करें।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् स्थापना काल से ही ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी की प्रेरणा से शीलवान नागरिकों का निर्माण कर रही है। शीलवान मनुष्य से अधिक मूल्यवान कोई चीज है ही नहीं। शील भ्रष्ट मनुष्य केवल पाप ही नहीं करता है अपितु पापियों का पालन-पोषण भी करता है। शील विहीन मनुष्य पशु बन जाता है और मनुष्य का पशु बन जाना ही उसकी मृत्यु है।

समावर्तन संस्कार समारोह के अवसर पर मैं महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों के प्रति शुभकामना व्यक्त करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि महाविद्यालय में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों व शिक्षकों के अन्दर ईश्वर ऐसी ऊर्जा का संचार व संवहन करें कि वे जो भी कार्य सम्पादित करें वह समाज व राष्ट्र के समक्ष एक सद् कार्य के रूप में उपस्थित हो ताकि समाज उससे हमेशा प्रेरणा ग्रहण करता रहे।

राम अचल सिंह

(प्रो. रामअचल सिंह)

प्रो.पी.सी.त्रिवेदी
कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर
विश्वविद्यालय, गोरखपुर
फोन : 0551–2201577

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतिवर्ष की भाँति इस सत्रान्त में भी २७ फरवरी को 'समावर्तन संस्कार समारोह' कर रहा है। स्नातक शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन के अगले सोपान पर कदम रखने वाले छात्र-छात्राओं को भारतीय संस्कृति के प्रति संकल्पित करने एवं उन्हें भारतीय जीवन मूल्य जीने की प्रेरणा देने के उद्देश्य से आयोजित होने वाला 'समावर्तन संस्कार समारोह' शिक्षा के मूल उद्देश्य की पूर्ति में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। शिक्षा की सार्थकता इसी में है कि वह मनुष्य को संतुलित, संयमित और श्रेष्ठ जीवन प्रदान करने के साथ 'मुक्ति' का मार्ग प्रशस्त करे। मुझे विश्वास है कि महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा सम्पन्न होने वाले 'समावर्तन संस्कार समारोह' से छात्र-छात्राओं को यशस्वी जीवन जीने की दिशा मिलेगी। सभी विद्यार्थियों को अपने प्रज्ञामय जीवन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामना।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर के 'समावर्तन संस्कार समारोह' के आयोजन हेतु हार्दिक वधाई।

Trivedi

(पी.सी. त्रिवेदी)
कुलपति

Padmashri
PRAKASH SINGH
formerly Director General BSF, DGP UP
& DGP Assam
3C, Super Deluxe Flats,
Sector-15A, Noida- 201301 (U.P.)
Phone : 0120-4334193

MESSAGE

I send my greetings to the Maharana Prata Post-Graduate College, Gorakhpur on the Convocation Ceremony being held on February 27, 2011.

A number of students would be entering a new phase of life after having got the graduate degree. It will be a life full of challenges and opportunities for them.

The education imparted at the Maharana Pratap Post-Graduate College, I am sure, would stand the students in good stead and enable them make a mark in life, achieving excellence in whatever specialized area they choose or in the field of activity they opt for.

"What India needs especially at this moment", as Aurobindo said, "is the aggressive virtues, the spirit of soaring idealism, bold creation, fearless resistance, courageous attack." I am sure the students passing out would display these qualities in abundant measure.

My good wishes and blessings to all the students.

(Prakash Singh)

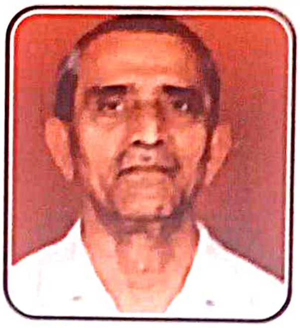

प्रो. प्रताप सिंह
पूर्व अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं
पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा सेवा चयन आयोग उ.प्र.
फोन : 0551 - 2200949

शुभकामना संदेश

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा समावर्तन संस्कार समारोह के रूप में विद्यार्थियों को स्नातक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात उन्हें अपने जीवन में आगे बढ़ने हेतु शुभ आशीर्वाद देने का आयोजन किया जा रहा है। यह जान कर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

जिस विद्यालय को महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ का आशीर्वाद प्राप्त हो उसे किसी अन्य से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मोहताज होने की आवश्यकता ही नहीं। जिसे गोरक्षपीठ जैसे प्रबंधतंत्र का आशीर्वाद बराबर मिल रहा हो, जहाँ पर शिक्षक समर्पित भाव से कार्य कर रहे हों, तथा जहाँ पर विद्यार्थी अनुशासित होकर अध्ययनरत हों उस महाविद्यालय का भविष्य तो यों ही उज्ज्वल है।

मेरी हार्दिक शुभकामना है कि यह कालेज अपनी उत्कृष्ट परम्परा के आधार पर दिन प्रतिदिन प्रगति करते हुए सफलता के शिखर पर पहुँचे। समावर्तन संस्कार समारोह की सफलता हेतु मेरी ढेर सारी शुभकामना।

(प्रताप सिंह)

मुख्य अतिथि

पदमश्री प्रकाश सिंह

भारत सरकार के प्रतिष्ठित सम्मान पद्मश्री से विभूषित श्री प्रकाश सिंह भारतीय पुलिस सेवा के ऐसे अधिकारी रहे हैं, जिनकी 'आतंकवाद और उस पर नियन्त्रण' के क्षेत्र में विशेषज्ञता अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य है। पुलिस सेवा में रहते हुए उन्होंने नागालैण्ड-असम में उल्फा उग्रवादियों, पंजाब में खालिस्तान समर्थक आतंकवादियों एवं जम्मू-कश्मीर के पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों से निपटने में महारथ हासिल की। फलतः राष्ट्रीय सुरक्षा में अतुलनीय योगदान के कारण १९९१ ई. में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। शौर्यपूर्ण सेवा के लिए भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने उन्हें 'पुलिस मेडल' से तथा उत्तर प्रदेश में पुलिस प्रशासन में अविस्मरणीय योगदान के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने 'राज्य पुरस्कार' से सम्मानित किया।

भारतीय पुलिस सेवा के इस होनहार सिपाही ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से १९५७ ई. में इतिहास विषय में परास्नातक की शिक्षा प्राप्त कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ही अध्यापन के साथ अपनी राष्ट्रीय जीवन-यात्रा की सक्रिय नागरिक भूमिका प्रारम्भ की। १९५९ ई. में ही आप भारतीय पुलिस सेवा की परीक्षा में देश में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर भारतीय पुलिस सेवा में चयनित हुए।

पंजाब जब आतंकवाद की आग में जल रहा था, आतंकवादी गतिविधियाँ अपने चरम पर थी, उस समय १९८७ से १९९१ तक सीमा सुरक्षा बल के महानिरीक्षक (IG) एवं अपर महानिदेशक (ADG) के रूप में आप ने आतंकवादियों की रीढ़ तोड़ दी। पंजाब में आप अपनी योग्यता, क्षमता एवं दृढ़ इच्छा शक्ति की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और १९९१ में उल्फा आतंकवादियों से त्रस्त असम क्षेत्र में चुनाव सम्पन्न कराने हेतु आपको वहाँ का पुलिस महानिदेशक (DGP) बनाकर भेजा गया। आपके नेतृत्त्व में एक भी गोली चलाये बिना असम में शान्तिपूर्ण चुनाव सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात माफिया के आतंक से कराह रहे उत्तर प्रदेश को माफियाराज से मुक्ति दिलाने हेतु आप १९९१ में उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक बने तथा १९९३ तक के आपके कार्यकाल में यहाँ के माफियाराज का पूर्णतः अन्त हो गया। आपकी सफलतापूर्वक कार्रवाइयों को देखते हुए पुनः सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक के रूप में आप १९९३-९४ ई० में जम्मू-कश्मीर में नियुक्त किये गये, जहाँ आपकी सशक्त प्रहरी की भूमिका जग-जाहिर है।

आतंकवादियों के खिलाफ आपकी सफलतम व्यूहरचना को देखते हुए भारत सहित अमेरिका, रूस, बांग्लादेश, थाइलैण्ड, कोलम्बिया आदि देशों में आयोजित लगभग दो दर्जन से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/संगोष्ठियों में आप के शोधपूर्ण व्याख्यान हुए हैं। पुलिस प्रशिक्षण कालेज, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, प्रशासनिक अकादमी, सुरक्षा सेवा स्टॉफ कालेज, राष्ट्रीय सुरक्षा कालेज, नीतिशोध केन्द्र आदि संस्थानों में आपातकालीन परिस्थितियों, आतंकवाद, नक्सलवाद, जातीय समस्याओं, पुलिस सुधार आदि विषयों पर विशेष व्याख्यान के माध्यम से आपने अपने अध्ययन एवं अनुभव से देश तथा दुनिया को दिशा निर्देश दिया है। आपकी नागालैण्ड, नैक्सलाइट मूवमेन्ट इन इण्डिया (फ्रेन्च में भी अनुवादित) कोहिमा टू कश्मीर, इण्डियाज नार्थइस्ट नामक प्रकाशित पुस्तकें अत्यन्त लोकप्रिय हुई हैं। आपके लगभग ढाई सौ लेख राजनीति और सुरक्षा विषयों पर इण्डियन एक्सप्रेस, फाइनेन्शियल एक्सप्रेस, टाइम्स आफ इण्डिया, पायनियर, एकोनामिक टाइम्स, हिन्दुस्तान टाइम्स सहित अन्य अनेक समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। आल इण्डिया रेडियो एवं टेलीविजन चैनलों पर विविध राष्ट्रीय, सामाजिक, सुरक्षा आदि विषयों पर एक प्रतिष्ठित विशेषज्ञ के रूप में आपको आमंत्रित किया जाता है।

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रशासनिक सेवा के लिए चयन हेतु विशेषज्ञ समितियों के सदस्य, प्रेसिडेन्ट आफ इण्डिया हेरिटेज रिसर्च फाउण्डेशन में सहभाग (१९९४-९५), दक्षिण एशिया में नशा उन्मूलन में सलाहकार (१९९७), विवेकानन्द केन्द्र उत्तर प्रदेश के संयोजक (२००१-०३) आन्ध्रप्रदेश सरकार द्वारा नक्सली उन्मूलन हेतु गठित एक सदस्यीय जाँच आयोग के अध्यक्ष (२००३-०४), केन्द्र एवं राज्य सरकारों में सर्वोच्च न्यायालय के माध्यम से पुलिस सुधार के क्षेत्र में सुझाव लागू कराने, इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा उत्तर प्रदेश में राजनीति को अपराधियों से मुक्त करने हेतु गठित समिति के अध्यक्ष (२००७-०८), योजना आयोग द्वारा २००८ में 'डेवलपमेन्ट चैलेन्जेज इन एक्स्ट्रिमिस्ट एफेक्टेड एरियाज' हेतु गठित विषय विशेषज्ञ समूह के सदस्य के रूप में आपकी सेवाएं अत्यन्त सराहनीय एवं अनुकरणीय हैं। वस्तुतः श्री प्रकाश सिंह भारत माँ के एक ऐसे सपूत हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रीय एकता-अखण्डता हेतु समर्पित किया है और एक 'प्रकाश स्तम्भ' की तरह आप अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर दैदिव्यमान हैं।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

भारत के स्वाधीनता संग्राम में बाल गंगाधर तिलक का युग समाप्त होते-होते कांग्रेस के नेतृत्व पर प्रश्न चिह्न खड़ा होने लगा था। १९२० के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अलग राह पकड़ी और १९३०-३१ तक आते-आते कांग्रेस के स्पष्ट सहयोग के अभाव में क्रान्तिकारियों का दमन करने में ब्रिटिश हुकूमत सफल रही। १९१५-१६ के बाद के इसी काल खण्ड में स्वाधीनता संग्राम की अगुवा कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण की भी शिकार हुई। इस युग तक अंग्रेजों द्वारा भारत में अंग्रेजियत में रमे बाबुओं की फौज खड़ी करने की शिक्षा नीति का प्रभाव भी दिखने लगा था। देश के समक्ष एक चुनौती थी कि भारत की नयी पीढ़ी भारतीयता के साँचे में कैसे ढले। अपनी संस्कृति और स्वदेशी दृष्टि से शिक्षा प्रणाली और शिक्षा नीति ही एक मात्र इस चुनौती का समाधान था। इस चुनौती को भी भारतीय मनीषियों ने स्वीकार किया।

महामना मदन मोहन मालवीय के अथक प्रयास से ४ फरवरी १९१६ ई० को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय लोकार्पित हो गया। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित यह विश्वविद्यालय पूरे देश में भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा पद्धति का एक नया मानक बना और इसी धारा को तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने आगे बढ़ाते हुए १९३२ ई० में गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की नींव रखी। ब्रिटिश हुकूमत को शिक्षा के भी क्षेत्र में भारतीय मनीषियों द्वारा यह कड़ी चुनौती थी कि भारत अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ है, वह अपना तंत्र, अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति और अपने जीवन मूल्यों की पुनः स्थापना अपनी योजनानुसार करेगा। यह दूरदृष्टि थी कि देश जब आजाद होगा तब तक देश की व्यवस्था चलाने हेतु भारतीय पद्धति के शिक्षा संस्थानों से निकले युवाओं की फौज तैयार मिलेगी।

देश पराधीन था। जनता विपन्न थी। ज्ञान कौशन के अभाव में स्वाभिमान और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की चेतना का जागरण दुष्कर था। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज अपनी संकल्प शक्ति के बल पर आजादी की लड़ाई के एक प्रमुख शस्त्र के रूप में शैक्षिक क्रान्ति के पथ पर भी आगे बढ़े। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत १९३२ में बक्शीपुर में किराये के एक मकान में महाराणा प्रताप क्षत्रिय स्कूल प्रारम्भ हुआ। १९३५ में इसे जूनियर हाईस्कूल की मान्यता मिल गयी और १९३६ में यहाँ हाईस्कूल की पढ़ाई प्रारम्भ की गयी तथा इसका नाम 'महाराणा प्रताप हाई स्कूल' हो गया। इसी बीच महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के अथक प्रयास से गोरखपुर के सिविल लाइन्स में पाँच एकड़ भूमि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को प्राप्त हो गयी और महाराणा प्रताप हाईस्कूल का केन्द्र सिविल लाइन्स हो गया तथा देश के आजाद होते समय यह विद्यालय महाराणा प्रताप इन्टरमीडिएट कालेज के रुप में प्रतिष्ठित हुआ।

१९४९-५० में इसी परिसर में महाराणा प्रताप डिग्री कालेज की स्थापना महाराणा प्रताप शिक्षसा परिषद् का अगला पड़ाव था। अगस्त १९५८ में महन्त जी ने महाराणा प्रताप डिग्री कालेज को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु समर्पित किया और विश्वविद्यालय की स्थापना के आधार स्तम्भ बने। वर्तमान गोरखपुर विश्वविद्यालय का वाणिज्य संकाय आज भी उसी महाराणा प्रताप डिग्री कालेज भवन में चल रहा है तथा उसी परिसर में विश्वविद्यालय का एम.बी.ए., शिक्षा शास्त्र एवं वाणिज्य संकाय का नवीन भवन स्थित है। तत्पश्चात् महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ने ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नाम से वर्तमान दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना की, सम्प्रति यह विश्वविद्यालय परिसर से सटे महानगर का एक अति प्रतिष्ठित महाविद्यालय है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा वर्तमान में दर्जनों शिक्षण संस्थाएँ गोरखपुर क्षेत्र में संचालित हो रही हैं। इनमें गोरखपुर महानगर में महाराणा प्रताप पालिटेक्निक, श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार एवं बालिका विद्यालय सिविल लाइन्स, दिग्विजयनाथ बी.एड. कालेज, महाराणा प्रताप टेलरिंग कालेज सिविल लाइन्स, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार जू० हा० स्कूल रामदत्तपुर, महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय रामदत्तपुर, महाराणा प्रताप कृषक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जंगल धूसड़,दिग्विजयनाथ पूर्व माध्यमिक विद्यालय, चौक माफी और महाराणा प्रताप सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, बेतियाहाता गोरखपुर प्रमुख हैं। महराजगंज जनपद में दिग्विजयनाथ इन्टर कालेज, चौक बाजार, दिग्विजयनाथ शिशु शिक्षा विहार चौक बाजार, परमहंस शिशु शिक्षा सदन, सोनाड़ी जंगल प्रमुख प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाएँ हैं। जुलाई २०११ से महराजगंज जनपद के चौक बाजार में महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय भी प्रारम्भ हो रहा है जिसकी नींव २२ नवम्बर २०१० को पड़ गई है। महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़ इसी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित है।

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम (सत्र : 2010-11)

महाविद्यालय में वृक्षारोपण :

७ जुलाई, २०१० को महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सदर सांसद एवं गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने आँवला, नीम, जामुन, आम, पीपल के पांच वृक्ष लगाकर पौध रोपण अभियान का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर ३०० पौधे लगाये गये।

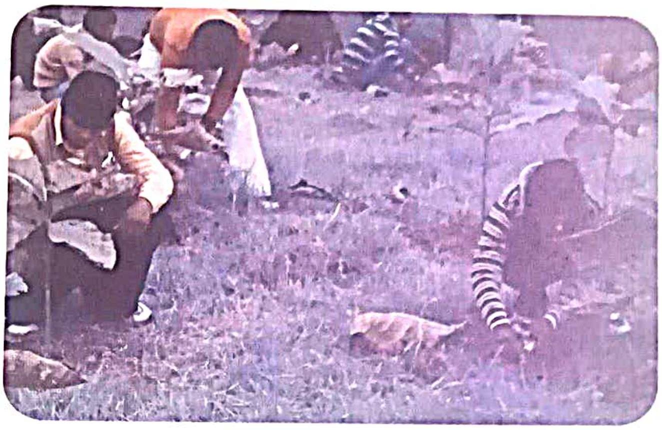

महाविद्यालय में वृक्षारोपण

सत्रारम्भ :

शैक्षिक पञ्चांग के अनुसार १६ जुलाई से बी.ए., बी.काम., बी.एस-सी. द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ हुई तथा १ अगस्त से बी.ए., बी.काम., बी.एस-सी. प्रथम वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ की गयी।

देश विभाजन की पूर्व संध्या पर आयोजित व्याख्यान

देश विभाजन की पूर्व संध्या पर व्याख्यान :

१३ अगस्त, २०१० को प्रतिवर्ष की भांति देश विभाजन की पूर्व संध्या पर **'देश विभाजन के गुनहगार'** विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार **श्री अवधेश कुमार** (नई दिल्ली) तथा मुख्य वक्ता भा. इ. संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री **श्री बालमुकुन्द** जी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता **प्रो. अशोक श्रीवास्तव**, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने की। कार्यक्रम का संचालन स्नातक कला तृतीय वर्ष की छात्रा कु. मुन्नी बर्नवाल ने किया तथा आभार डॉ. विजय चौधरी, प्रभारी, भूगोल विभाग द्वारा किया गया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह :

महाविद्यालय में १५ अगस्त का राष्ट्रीय पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के पश्चात छात्र/छात्राओं ने अत्यन्त रोमांचकारी एवं देश-प्रेम से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सांस्कृतिक कार्यक्रम सरस्वती वन्दना से आरम्भ होकर राष्ट्रगीत वन्देमातरम् के साथ सम्पन्न हुआ।

स्वैच्छिक श्रमदान :

महाविद्यालय में प्रत्येक सोमवार को छात्र/छात्राओं, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वैच्छिक श्रमदान किया जाता है।

स्वतन्त्रता दिवस समारोह

ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति साप्ताहिक व्याख्यान-माला : (१७-२३ अगस्त, २०१०)

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालय द्वारा 'दिग्विजयनाथ स्मृति साप्ताहिक व्याख्यान-माला' का आयोजन किया गया। १७ अगस्त को उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के पूर्व कुलपति डॉ. शिवमोहन सिंह रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता उ.प्र. हिन्दी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. कन्हैया सिंह ने की। संचालन छात्रसंघ के उपाध्यक्ष श्री प्रदीप पाण्डेय व आभार ज्ञापन, कार्यक्रम के संयोजक संतोश कुमार, प्रवक्ता, भौतिकी ने किया।

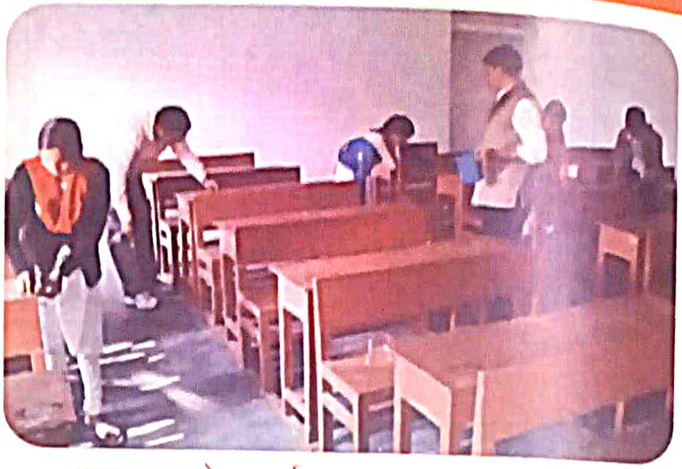

श्रमदान करते प्राचार्य, प्राध्यापक एवं छात्र-छात्रा

१८ अगस्त : व्याख्यान-माला के दूसरे दिन **'क्षार, अम्लीयता और घेंघा का उपचार'** विषय पर बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर के रसायन शास्त्र विभाग के डॉ. योगेन्द्र पाल कोहली का शोधपूर्ण व्याख्यान हुआ।

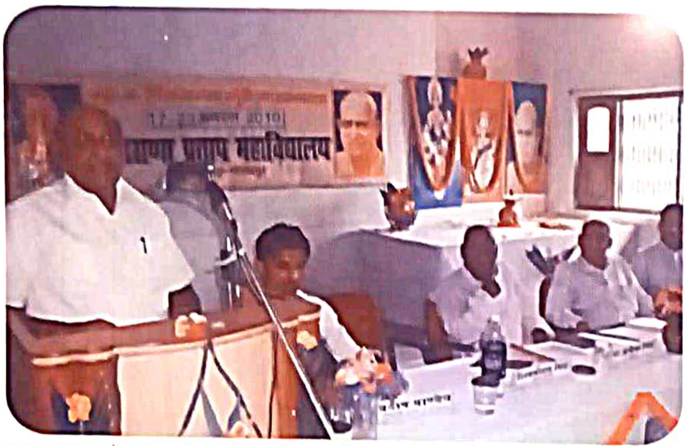

व्याख्यानमाला के उद्घाटन सत्र में सम्बोधित करते मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति डॉ. शिवमोहन सिंह

१९ अगस्त : व्याख्यान-माला के तीसरे दिन 'A Garlic is natures boon to mankind' विषय पर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, प्राणि विज्ञान विभाग के प्रो. डी.के. सिंह ने व्याख्यान दिया।

२० अगस्त : व्याख्यान-माला के चौथे दिन दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने **'उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन शैली और युवा'** विषय पर व्याख्यान देकर हमें अनुग्रहीत किया।

२१ अगस्त : व्याख्यान-माला के पांचवे दिन दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभाग में उपाचार्य डॉ. श्रीभगवान सिंह ने **'अशान्त भारतीय सीमाएं'** विषय पर अपना शोधपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया।

२२ अगस्त : व्याख्यान-माला के छठवें दिन मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर के असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ. गोविन्द पाण्डेय ने **''गोरखपुर परिक्षेत्र : पर्यावरणीय परिदृश्य''** तथा मारवाड़ इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य श्री आर.एन. गुप्ता ने **''आर्थिक नियोजन का महत्व''** विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

२३ अगस्त : व्याख्यान माला के समारोप समारोह की अध्यक्षता महाविद्यालय प्रवन्ध समिति के उपाध्यक्ष **प्रो. यू.पी. सिंह,** पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने

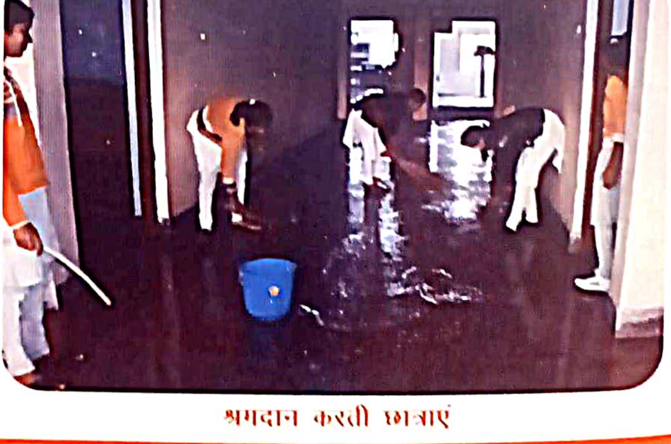

श्रमदान करती छात्राएं

छात्रसंघ चुनाव पश्चात् उल्लास में विद्यार्थी

की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **प्रो. रामअचल सिंह**, पूर्व कुलपति, राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद एवं पूर्व अध्यक्ष, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश तथा विशिष्ट अतिथि श्री रामजनम सिंह, प्रधानाचार्य, महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, गोरखपुर रहे।

छात्रसंघ चुनाव :

३१ अगस्त, २०१० को छात्रसंघ का चुनाव सम्पन्न हुआ, योग्यता एवं उपस्थिति के आधार पर छात्र प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ। तत्पश्चात् १ सितम्बर को अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा महामंत्री का चुनाव हुआ, जिसमें कुल ४३ प्रतिनिधियों में से ४१ प्रतिनिधियों ने मतदान किया। श्री ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह को अध्यक्ष, श्री विश्वजीत शर्मा को उपाध्यक्ष एवं श्री विनय कुमार शर्मा को महामंत्री चुना गया।

छात्रसंघ : आमसभा

छात्रसंघ की साधारण सभा की बैठक छात्रसंघ अध्यक्ष की अध्यक्षता में प्रत्येक माह के प्रथम सप्ताह के अन्तिम कार्य दिवस को सम्पन्न होती है।

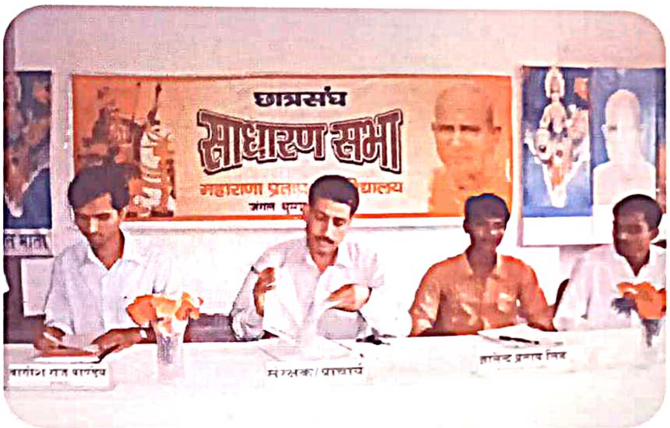

छात्रसंघ साधारण सभा की बैठक

हिन्दी दिवस पूर्व संध्या पर व्याख्यान : १३ सितम्बर, २०१०

महाविद्यालय में हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या पर ''स्वतंत्रता के साढ़े छः दशक और हिन्दी की विकास यात्रा'' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया जिसके मुख्य वक्ता प्रख्यात साहित्यकार एवं पूर्व प्राचार्य डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय थे। सभा का संचालन श्री विश्वजीत शर्मा, स्नातक कला द्वितीय वर्ष ने तथा प्रस्ताविकी डॉ. आरती सिंह, प्रवक्ता, हिन्दी विभाग ने किया।

विशिष्ट व्याख्यान : १४ सितम्बर, २०१०

विशिष्ट व्याखयान में बोलते प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर

महाविद्यालय में दीनदयाल उपध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के ''प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग'' के अन्तर्गत संचालित महात्मा बुद्ध अध्ययन केन्द्र के तत्त्वावधान में **'भगवान बुद्ध एवं उनकी लोकव्यापी शिक्षाएं'** विषय पर लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष **प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर** का शोधपूर्ण एवं बोधगम्य व्याख्यान हुआ। प्रस्ताविकी एवं स्वागत श्री लोकेश प्रजापति, प्राचीन इतिहास विभाग तथा संचालन श्री ओमजी उपाध्याय ने किया।

संगोष्ठी : २३ सितम्बर, २०१०

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत महाविद्यालय द्वारा श्रद्धांजलि सप्ताह समारोह के चतुर्थ दिन 'छुआछूत राष्ट्रीय एकता में बाधक' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के सानिध्य एवं पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज के मार्ग दर्शन में यह संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी का आयोजन गोरक्षनाथ मंदिर के सभागार में हुआ।

हिन्दी दिवस पर मु. अतिथि डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय एवं अन्य

दिग्विजयनाथ श्रद्धांजलि समारोह : २६ सितम्बर, २०१०

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजवनाथ जी महाराज की पुण्य तिथि समारोह में महाविद्यालय परिवार ने गोरखनाथ मन्दिर के सभागार में आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में सम्मिलित होकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इसी समारोह में महाविद्यालय की शोध-पत्रिका **"विमर्श २०१०"** का विमोचन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज एवं पूर्व गृह राज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द महाराज जी द्वारा किया गया।

विमर्श – 2010 का विमोचन करते पूज्य सन्तगण

शिक्षक अभिभावक सम्मेलन : ०२ अक्टूबर, २०१०

महाविद्यालय में शिक्षक-अभिभावक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में श्री गंगेश्वर दत्त द्विवेदी अभिभावक संघ के अध्यक्ष, श्री सुनील कुमार त्रिपाठी एवं श्री वकील मिश्र-उपाध्यक्ष, डॉ. स्नेहलता त्रिपाठी-सचिव तथा श्री त्रियुगी नारायण व श्रीमती सुनीता जायसवाल-सहसचिव चुने गये।

पुरातन छात्र परिषद् बैठक : ०२ अक्टूबर, २०१०

महाविद्यालय में पुरातन छात्र परिषद् की बैठक आयोजित की गयी जिसमें वर्तमान सत्र के लिए पुरातन छात्र परिषद् का गठन किया गया। बैठक में श्री सुवोध मिश्र पुरातन छात्र परिषद् के अध्यक्ष, श्री राहुल सिंह-उपाध्यक्ष तथा दीपक कुमार सचिव चुने गये। सदस्य के

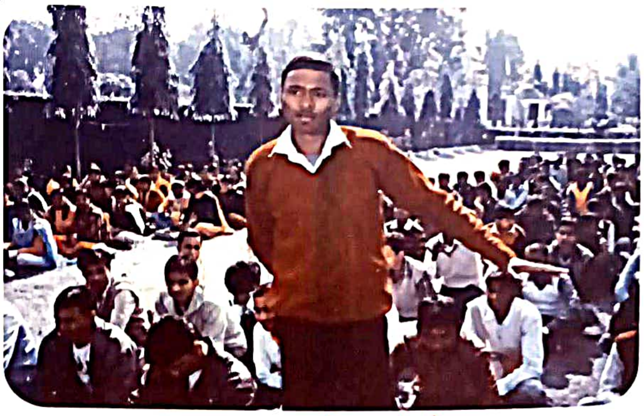

पुरातन छात्र परिषद की बैठक

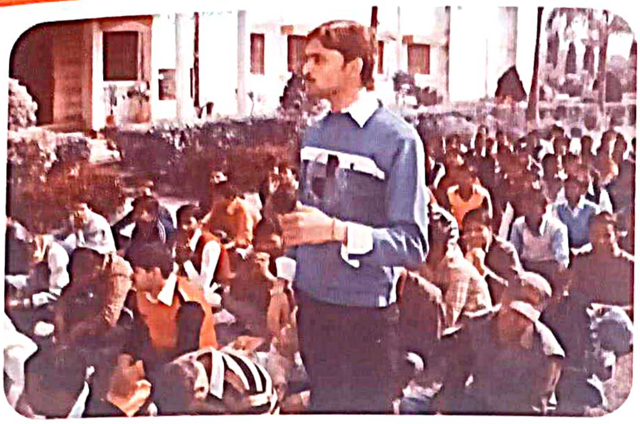

साधारण सभा में छात्र

रूप में कु. जरिमन चौधरी, कु. शमा अफरोज, अर्चना गुप्ता, सुजीत कुमार सिंह, भीम सिंह, महेश कुमार सैनी, सुमित कुमार त्रिपाठी तथा अरविन्द कुमार शुक्ला आदि चुने गये।

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की स्थापना : १३ अक्टूबर, २०१०

ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक स्वावलम्बन एवं स्वरोजगार के उद्देश्य से महाविद्यालय में "योगिराज बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई केन्द्र" की स्थापना की गयी। श्री गोरक्षपीठ द्वारा संचालित गुरू श्रीगोरक्षनाथ सेवा संस्थान एवं महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से स्थापित इस प्रशिक्षण केन्द्र के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने की तथा मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सहारा गोरखपुर के सम्पादक श्री मनोज तिवारी जी रहे। कार्यक्रम में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. संजीत कुमार गुप्ता, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के मुख्य नियन्ता डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

निःशुल्क सिलाई कढ़ाई केन्द्र के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते पूज्य योगी आदित्यनाथ

राष्ट्रीय संगोष्ठी : २८-३० अक्टूबर, २०१०

महाविद्यालय एवं अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संयुक्त तत्वावधान में **'नाथ पंथ एवं भक्ति आन्दोलन'** विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि पूज्य सन्त श्री विजय कौशल जी महाराज रहे तथा अध्यक्षता गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी एवं महाविद्यालय के प्रबन्धक पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने की। विषय की प्रस्तावना अभाइसंयो के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. शिवाजी सिंह ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष श्री आशीष जी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष डॉ. कन्हैया सिंह ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह

संगोष्ठी में कुल २६ शोध पत्रों का वाचन हुआ। तकनीकी सत्रों में

प्रो. वागीश शुक्ल, प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी, डॉ. उदय प्रताप सिंह, डॉ. कुवँर बहादुर कौशिक, डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, डॉ. रंजीत सिंह, श्री वासुदेवाचार्य, डॉ. चन्द्रमौलि त्रिपाठी, डॉ. विमलेश के शोध-पत्र विशेश रूप से चर्चित रहे।

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी एवं सदर सांसद योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि दिल्ली आई.आई.टी. के प्रो. वागीश शुक्ल एवं डॉ. मयाशंकर सिंह थे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन समारोह

विशिष्ट व्याख्यान : ३ नवम्बर, २०१०

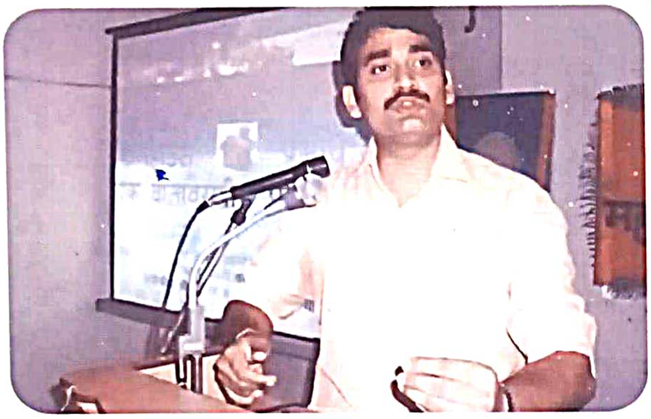

व्याख्यान देते युवा वैज्ञानिक डा. अनन्त नारायण भट्ट

व्याख्यान में डी.आर.डी.ओ. एवं इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर मेडिसिन एण्ड एलाइड सांइस के वैज्ञानिक डॉ. अनन्त नारायण भट्ट ने **'ग्रीन हाउस इफेक्ट, सूक्ष्म तरंगीय विकिरणों का मानव शरीर पर दुष्प्रभाव'** व इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस बंगलौर के युवा वैज्ञानिक श्री बृजेश नारायण भट्ट ने **'इंसेफेलाइटिस'** विषय पर अपने शोधपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन भौतिक विज्ञान के प्रभारी डॉ. संतोश कुमार ने किया।

संस्थापक समारोह : ४ दिसम्बर, २०१०

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक समारोह के उद्घाटन समारोह में निकाली जाने वाली शोभा यात्रा में महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं, प्राध्यापक एवं कर्मचारियों ने सक्रिय भूमिका निभाई। इस वर्ष छात्राओं द्वारा "१८५७ से.....अब तक" शीर्षक के अन्तर्गत महिलाओं के बढ़ते कदम तथा देश के विकास में उनका योगदान प्रदर्शित किया गया। छात्र/छात्राओं द्वारा विविध प्रकार की झाकियों से युक्त महाविद्यालय को शोभा-यात्रा का सर्वश्रेष्ठ प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

शोभा-यात्रा शोभा यात्रा का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते महाविद्यालय के छात्र

संस्थापक समारोह झांकी

राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर :

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत तीनों इकाई का संयुक्त प्रथम एक दिवसीय शिविर २५ दिसम्बर को महाविद्यालय परिसर में आयोजित हुआ। इसके अन्तर्गत छात्र/छात्राओं ने महाविद्यालय परिसर स्थित सागौन के बागीचे की गुड़ाई एवं सिंचाई तथा भवन के दक्षिणी लॉन की गुड़ाई एवं सिंचाई की गयी।

विशिष्ट व्याख्यान :

अभियान संस्था के नेतृत्त्व में २५ दिसम्बर को **'कन्या भ्रूण हत्या सभ्य समाज के माथे पर कलंक'** विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ। व्याख्यान के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध साहित्यकार एवं दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष आचार्य रामदेव शुक्ल तथा अध्यक्ष किसान पी.जी. कालेज सेवरही, कुशीनगर के पूर्व प्राचार्य डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय जी थे।

व्याख्यान में प्रो. रामदेव शुक्ल एवं डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय

राष्ट्रीय सेवा योजना का द्वितीय एक दिवसीय शिविर :

राष्ट्रीय सेवा योजना के 'गुरू श्रीगोरक्षनाथ', 'महाराणा प्रताप' एवं 'महन्त दिग्विजयनाथ इकाई' का संयुक्त द्वितीय एक दिवसीय शिविर २ जनवरी, २०११ को आयोजित किया गया। शिविर में स्वयं सेवक/सेविकाओं द्वारा श्रमदान एवं अभिगृहित ग्राम मंझरिया जंगल धूसड़ में विद्यालय न जाने वाले बच्चों का सर्वेक्षण किया गया। छात्र-छात्राओं ने गांव के लोगों के साथ पूरा दिन बिताया।

गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के ब्लड बैंक प्रभारी डा. अवधेश अग्रवाल

विशिष्ट व्याख्यान :

'रक्तदान और सामाजिक भ्रान्तियां' विषय पर २ जनवरी को महाविद्यालय में व्याख्यान आयोजित हुआ। इस अवसर पर गुरू श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के ब्लड बैंक प्रभारी डॉ. अवधेश अग्रवाल ने समाज में व्याप्त रक्तदान सम्बंधी भ्रान्तियों एवं वैज्ञानिक तथ्य पर शोध पूर्ण व्याख्यान दिया तथा छात्र-छात्राओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिये। विशिष्ट अतिथि अमर उजाला के वरिष्ठ पत्रकार श्री संजय तिवारी ने भी उपर्युक्त विषय पर प्रेरणादायी व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय सेवा योजना का सप्त दिवसीय विशेष शिविर : ६ से १५ जनवरी, २०११

उद्घाटन समारोह में मु. अतिथि प्रो. प्रताप सिंह एवं अन्य अतिथि

राष्ट्रीय सेवा योजना की तीनों इकाईयों का संयुक्त सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम मंझरिया को केन्द्र बनाकर छोटी रेतवहिया और हसनगंज में आयोजित किया गया। जिसमें १३२ स्वयं सेवक/ सेविकाओं ने हिस्सेदारी की। शिविर को उद्घाटन समारोह में उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग, इलाहाबाद के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रो. प्रताप सिंह, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष चरगावां ब्लाक प्रमुख श्री महेन्द्र पाल सिंह तथा मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. संजीत कुमार गुप्ता थे। १५ जनवरी को शिविर के समापन अवसर पर स्वयं सेवक/सेविकाओं द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि किसान पी.जी. कालेज सेवरही, कुशीनगर के पूर्व प्राचार्य डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय तथा विशिष्टि अतिथि दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह एवं डॉ. नीरज कुमार सिंह थे।

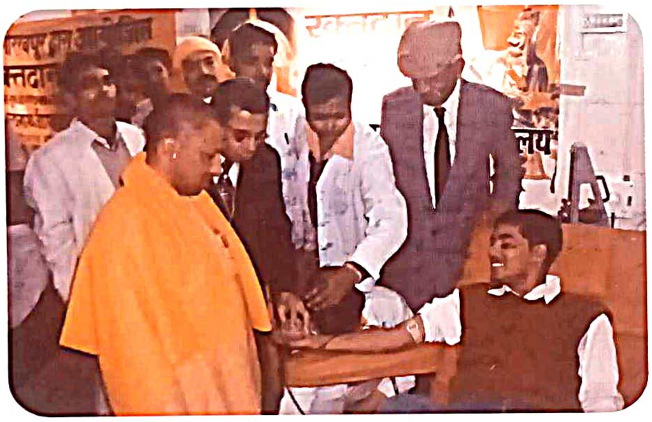
रक्तदान करता छात्र

रक्तदान : २२ जनवरी, २०११

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत गुरू श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के ब्लड बैंक में इक्कीस स्वयं-सेवकों द्वारा रक्तदान किया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह :

गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के पश्चात् राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हर्षोल्लास से गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री बालमुकुन्द जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध रसायन शास्त्री डा. वी.वी. मिश्रा थे। छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

गणतंत्र दिवस पर मु. अतिथि श्री बालमुकुन्द जी एवं अन्य

व्याख्यान देता छात्र

व्याख्यान प्रतियोगिता :

छात्र/छात्राओं के समग्र विकास हेतु प्रतिवर्ष की भाँति २८ जनवरी, २०११ को व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के १३ छात्र/छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। जिसमें प्रमुख रूप से इंसेफेलाइटिस : कारण एवं निवारण, रबर का प्रयोग एवं उसका दुष्प्रभाव, वाइल्ड लाइफ बनाम इनवायरमेन्ट, हाइड्रोजन बान्डिंग, नैनो मैटेरियल्स, लिवर (मेमल) का कार्य, विटामिन ए की संरचना एवं कार्य, फण्डामेन्टल ऑफ मैटरिक्स स्पेस, ग्लाइकोलाइसिस, प्रकाश (लाइट) के विविध आयाम, ट्रेजडी-कामेडी ड्रामा एवं भारतीय संविधान की विशेषता आदि विषयों पर निष्कर्षात्मक शोध-पत्र प्रस्तुत हुए। इस प्रतियोगिता में स्नातकोत्तर स्तर में श्री दीपक कुमार-प्रथम, सुश्री अदिति शंकर सिंह-द्वितीय एवं श्री वृजेश मणि त्रिपाठी-तृतीय स्थान पर रहे। स्नातक स्तर में श्री सत्यवान चौरसिया-प्रथम, श्री प्रदीप पाण्डेय-द्वितीय एवं सुश्री स्नेहा मिश्रा-तृतीय स्थान पर रहीं।

शिविर में श्रमदान करते छात्र

विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा :

महाविद्यालय में ३ फरवरी से १७ फरवरी, २०११ तक विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा डॉ. शिवकुमार बर्नवाल, परीक्षा प्रभारी के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुई। परीक्षा परिणाम २२ फरवरी २०११ को घोषित किया गया।

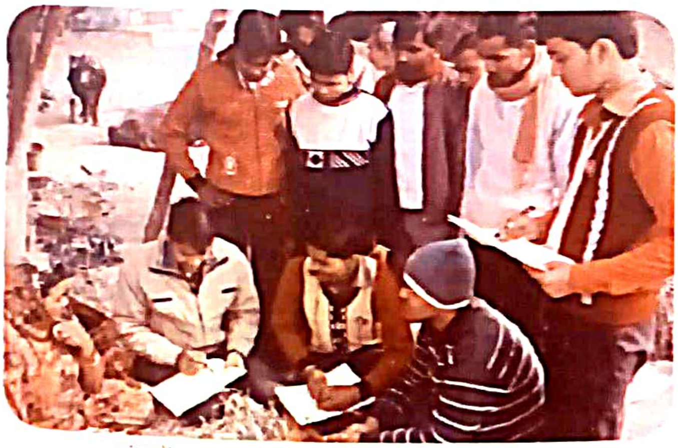

गांव में जन जागरूकता एवं सर्वेक्षण करते छात्र

राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर :

२४ एवं २६ फरवरी को राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया।

भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक ग्राम्य सर्वेक्षण :

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर के स्नातक कला-विज्ञान भाग-तीन, भूगोल विषय के अन्तर्गत भौगोलिक सामाजिक एवं आर्थिक ग्राम्य सर्वेक्षण, २२ फरवरी से प्रारम्भ है। ३ मार्च तक यह सर्वेक्षण कार्य पूर्ण होगा।

समावर्तन संस्कार समारोह : २७ फरवरी, २०११

कार्यशाला : १ मार्च, २०११

प्रतिवर्ष की भाँति महाविद्यालय में 'शिक्षक, आदर्श एवं व्यवहार' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन तय किया गया है। कार्यशाला तीन सत्रों में सम्पन्न होगी।

विश्वविद्यालयी परीक्षा : १० मार्च, २०११ से प्रस्तावित

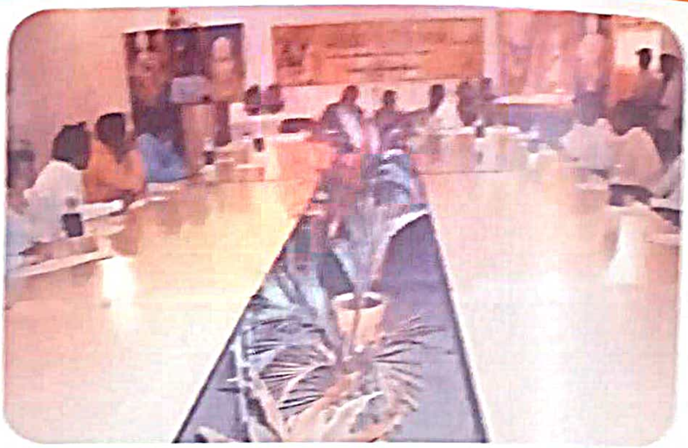

पिछले सत्र की कार्यशाला

समावर्तन– 2010 में छात्र-छात्राओं को समावर्तन उपदेश का संकल्प कराते महाविद्यालय के प्रबन्धक, गोरक्षपीठ उत्तराधिकारी पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज

प्रबन्ध समिति

अध्यक्ष	श्री महन्त अवेद्यनाथ, गोरक्षपीठाधीश्वर
उपाध्यक्ष	प्रो. यू.पी. सिंह, पूर्व कुलपति
प्रबन्धक/सचिव	श्री योगी आदित्यनाथ, सांसद लोकसभा
सदस्य	श्री प्रमोद चौधरी, प्रतिष्ठित व्यवसायी
	श्री धर्मेन्द्रनाथ वर्मा, अधिवक्ता
	श्री पारसनाथ मिश्रा, अधिवक्ता
	श्री प्यारे मोहन सरकार, अधिवक्ता
	श्री गोरक्ष प्रताप सिंह, निदेशक, जी.एन.पब्लिक स्कूल
	श्री योगी कल्पनाथ, धर्माचार्य
	डॉ. मयाशंकर सिंह, प्राचार्य
	श्री रामजन्म सिंह, प्रधानाचार्य

शिक्षक-अभिभावक समिति

२ अक्टूबर, २०१० को सम्पन्न शिक्षक अभिभावक बैठक में शिक्षक अभिभावक समिति का गठन किया गया।

अध्यक्ष	श्री गंगेश्वर दत्त द्विवेदी (अभिभावक)
उपाध्यक्ष	श्री सुनील कुमार त्रिपाठी (अभिभावक)
सचिव	डॉ. स्नेहलता त्रिपाठी (प्राध्यापक)
सहसचिव	श्री त्रियुगी नारायण सिंह (अभिभावक)
	श्रीमती सुनीता जायसवाल (अभिभावक)
सदस्य	श्री नृसिंह दूबे (अभिभावक)
	श्री चन्द्रभूशण त्रिपाठी (अभिभावक)
	सुश्री छाया (अभिभावक)
	श्री राघव (अभिभावक)
	श्री वाबूराम चौहान (अभिभावक)
	श्री जोखन प्रसाद चौहान (अभिभावक)

छात्रसंघ

प्रभारी	डॉ. प्रदीप राव	प्राचार्य
अध्यक्ष	श्री ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह	बी.ए. भाग-तीन
उपाध्यक्ष	श्री विश्वजीत शर्मा	बी.ए. भाग-दो
महामंत्री	श्री विनय कुमार शर्मा	बी.एस-सी. भाग-दो

प्रफुल्लचन्द स्नातकोत्तर रसायन छात्र परिषद्

अध्यक्ष	श्री दीपक कुमार
उपाध्यक्ष	श्री अविनाश यादव
मंत्री	श्री श्याम नारायाण धर दूबे
कोषाध्यक्ष	सुश्री प्रियंका शाही

छात्रसंघ के प्रतिनिधि

श्री शंकर निषाद	बी.ए. भाग-एक	समाजशास्त्र
सुश्री रीवा सिंह	बी.ए. भाग-एक	हिन्दी
श्री राम प्रताप पाल	बी.ए. भाग-एक	राजनीतिशास्त्र
सुश्री विभा शर्मा	बी.ए. भाग-एक	अर्थशास्त्र
सुश्री सुमन	बी.ए. भाग-एक	अंग्रेजी
श्री सुजीत कुमार सिंह	बी.ए. भाग-एक	प्राचीन इतिहास
सुश्री पूनम साहनी	बी.ए. भाग-एक	भूगोल
सुश्री मंजूलता शर्मा	बी.ए. भाग-दो	समाजशास्त्र
सुश्री मीरा	बी.ए. भाग-दो	हिन्दी
सुश्री बेबी यादव	बी.ए. भाग-दो	अर्थशास्त्र
श्री अवधेश भारती	बी.ए. भाग-दो	अंग्रेजी
सुश्री निशा निषाद	बी.ए. भाग-दो	प्राचीन इतिहास
श्री दीपक कुमार सिंह	बी.ए. भाग-दो	भूगोल
श्री अनुराग शाह	बी.ए. भाग-तीन	समाजशास्त्र
सुश्री आरती गुप्ता	बी.ए. भाग-तीन	हिन्दी
श्री सत्या प्रजापति	बी.ए. भाग-तीन	प्राचीन इतिहास
श्री रमजान अली	बी.एस-सी. भाग-एक	गणित
सुश्री अर्चना द्विवेदी	बी.एस-सी. भाग-एक	भौतिकी
श्री अवनीश पाण्डेय	बी.एस-सी. भाग-एक	रसायनशास्त्र
सुश्री जान्हवी सिंह	बी.एस-सी. भाग-एक	प्राणि विज्ञान
सुश्री स्नेहलता चौहान	बी.एस-सी. भाग-एक	वनस्पति विज्ञान
श्री मनीष कुमार त्रिपाठी	बी.एस-सी. भाग-दो	भौतिकी
श्री सतीश गौड़	बी.एस-सी. भाग-दो	रसायनशास्त्र
सुश्री शर्मिला निषाद	बी.एस-सी. भाग-दो	प्राणि विज्ञान
सुश्री सविता प्रजापति	बी.एस-सी. भाग-दो	वनस्पति विज्ञान
श्री राकेश यादव	बी.एस-सी. भाग-तीन	गणित
श्री आलोक रंजन शुक्ला	बी.एस-सी. भाग-तीन	रसायनशास्त्र
सुश्री अंजली सिंह	बी.एस-सी. भाग-तीन	प्राणि विज्ञान
श्री सुधीर मिश्रा	बी.एस-सी. भाग-तीन	वनस्पति विज्ञान
श्री राहुल पाण्डेय	बी.काम. भाग-एक	वाणिज्य (ग्रुप-बी)
श्री धीरेन्द्र प्रताप सिंह	बी.काम. भाग-एक	वाणिज्य (ग्रुप-सी)
श्री कुलदीप गुप्ता	बी.काम. भाग-एक	वाणिज्य (ग्रुप-डी)
श्री रवि रंजन दीक्षित	बी.काम. भाग-दो	वाणिज्य (ग्रुड-ए)
श्री विपिन सिंह	बी.काम. भाग-दो	वाणिज्य (ग्रुप-बी)
श्री नन्हें कुमार गुप्ता	बी.काम. भाग-दो	वाणिज्य (ग्रुप-सी)
सुश्री ज्योत्सना सिंह	बी.काम. भाग-तीन	वाणिज्य (ग्रुप-डी)

छात्रसंघ पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण राज्य सरकार के अध्यादेश के कारण न हो सका।

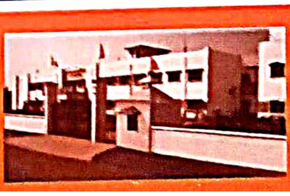

पुरातन छात्र परिषद्

प्रभारी	डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य
अध्यक्ष	श्री सुबोध मिश्र
उपाध्यक्ष	श्री राहुल सिंह
सचिव	दीपक कुमार
सदस्य	सुश्री जैसमीन चौधरी
	सुश्री शमा आफरोज
	सुश्री अर्चना गुप्ता
	श्री सुजीत कुमार सिंह
	श्री भीम सिंह
	श्री महेश कुमार सैनी
	श्री सुमित कुमार त्रिपाठी
	श्री अरविन्द कुमार शुक्ला
	सुश्री रत्ना सिंह
	सुश्री बबिता सिंह
	श्री अश्विनी यादव
	सुश्री रिंकी पाण्डेय
	सुश्री पूनम शर्मा
	श्री आकाश श्रीवास्तव

प्रवेश समिति

संयोजक	डॉ. शिवकुमार बर्नवाल
सह संयोजक	डॉ. रघुबीर नारायण सिंह
	डॉ. शालिनी सिंह
	श्री नन्दन शर्मा

चक्रानुक्रम में सभी प्राध्यापकों का सहयोग लिया जाता है।

छात्र प्रवेश परामर्श समिति

श्री ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह	(बी.ए. भाग-तीन)
सुश्री चन्दा उपाध्याय	(बी.ए. भाग-तीन)
श्री लवकुश कुमार प्रजापति	(बी.एस-सी भाग-दो)
श्री सतीश गौड़	(बी.एस-सी भाग-दो)
सुश्री सविता प्रजापति	(बी.एस-सी भाग-दो)
सुश्री अराधना दीक्षित	(बी.एस-सी भाग-दो)
श्री सुधीर मिश्रा	(बी.एस-सी भाग-तीन)
सुश्री शालिनी शुक्ला	(बी.एस-सी भाग-तीन)
श्री विपिन कुमार सिंह	(बी.कॉम. भाग-दो)
सुश्री ज्योत्सना सिंह	(बी.कॉम. भाग-तीन)

प्रवेश समिति में उन छात्र-छात्राओं को चयनित किया जाता है जो विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में अपने वर्ग में सर्वोच्च अंक प्राप्त करते हैं।

नियन्ता मण्डल

मुख्य नियन्ता	डॉ. पुरुषोत्तम पाण्डेय
नियन्ता	डॉ. राजेश शुक्ल
	श्री सन्तोष कुमार
	श्री मनोज कुमार वर्मा
	श्रीमती कविता मन्ध्यान
	श्री नन्दन शर्मा
	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव

छात्र नियन्ता मण्डल

श्री विश्वजीत शर्मा	बी.ए. भाग-दो
श्री विपिन सिंह	बी.काम. भाग-दो
श्री अवधेश यादव	बी.ए. भाग-दो
श्री दीपक सिंह	बी.ए. भाग-दो
श्री अर्जुन निषाद	बी.ए. भाग-तीन
श्री कुलदीप गुप्ता	बी.काम. भाग-एक

रक्तदाता

१. श्री रणविजय सिंह	बी.एस-सी. भाग-एक
२. श्री गजन कुमार सिंह	बी.ए. भाग-एक
३. श्री संजीव कुमार	बी.ए. भाग-एक
४. श्री बृजेश कुमार यादव	बी.ए. भाग-एक
५. श्री कृष्ण कुमार प्रजापति	बी.एस-सी. भाग-दो
६. श्री अवधेश भारती	बी.ए. भाग-दो
७. श्री बादल सिंह,	बी.ए. भाग-दो
८. श्री विश्वजीत शर्मा	बी.ए. भाग-दो
९. श्री राहुल सिंह	बी.ए. भाग-दो
१०. श्री दीपक सिंह	बी.ए. भाग-दो
११. श्री अनुराग शाह	बी.ए. भाग-तीन
१२. श्री सचिन कुमार चौहान	बी.ए. भाग-तीन
१३. श्री ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह	बी.ए. भाग-तीन
१४. श्री दीपक कुमार	एम.एस-सी. प्रथम वर्ष
१५. श्री बृजेश मणि त्रिपाठी	एम.एस-सी. प्रथम वर्ष
१६. श्री शेषनारायण धर दूबे	एम.एस-सी. प्रथम वर्ष
१७. श्री अंजनी कुमार गुप्ता	एम.एस-सी. प्रथम वर्ष
१८. श्री संजय कुमार शर्मा	कम्प्यूटर आपरेटर
१९. श्री शिव प्रसाद शर्मा	पुस्तकालयाध्यक्ष
२०. श्री नन्दन शर्मा	प्रवक्ता-वाणिज्य विभाग
२१. डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो
२२. डॉ. प्रदीप राव	प्राचार्य

प्रयोगशाला समिति

प्रभारी	श्री सत्यप्रकाश सिंह	प्राध्यापक
सदस्य	श्री रमजान अली	बी.एस-सी. भाग-एक
	श्री आलोक रंजन शुक्ल	बी.एस-सी. भाग-तीन
	सुश्री सविता प्रजापति	बी.एस-सी. भाग-दो

छात्रा समिति

प्रभारी	डॉ. आरती सिंह	प्राध्यापक
सदस्य	सुश्री बबिता शर्मा	बी.काम. भाग-तीन
	सुश्री पूनम साहनी	बी.एस-सी. भाग-एक
	सुश्री श्वेता सिंह	बी.ए. भाग-दो
	सुश्री रीवा सिंह	बी.ए. भाग-एक
	सुश्री विनिता सहानी	बी.ए. भाग-दो

प्रार्थना एवं स्वच्छता समिति

प्रभारी	श्रीमती कविता मन्ध्यान	प्राध्यापक
सदस्य	श्री विनय कुमार शर्मा	बी.एस-सी. भाग-दो
	सुश्री अंजली सिंह	बी.एस-सी. भाग-तीन

पुस्तकालय तथा सूचना एवं परामर्श समिति

प्रभारी	श्री संतोष कुमार	प्राध्यापक
	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	प्राध्यापक
सदस्य	सुश्री पूनम साहनी	बी.एस-सी. भाग-एक
	सुश्री शर्मिला निषाद	बी.एस-सी. भाग-दो
	श्री सुधीर मिश्र	बी.एस-सी. भाग-तीन
	सुश्री अर्चना द्विवेदी	बी.एस-सी. भाग-एक

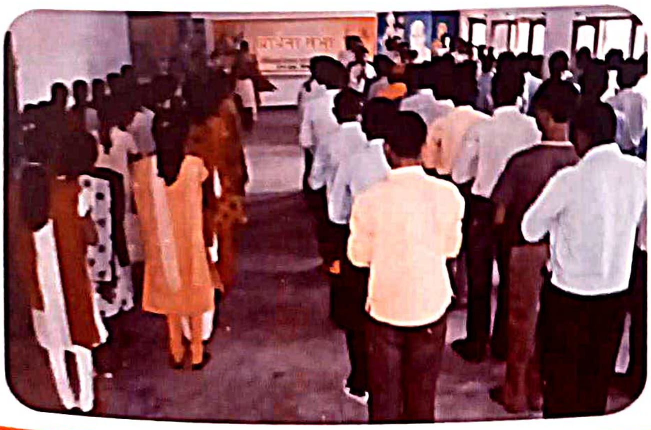

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

प्रभारी	श्री लोकेश कुमार प्रजापति	
सदस्य	सुश्री जान्हवी सिंह	बी.एस-सी. भाग-एक
	सुश्री विभा शर्मा	बी.ए. भाग-एक
	सुश्री सुमन	बी.ए. भाग-एक
	श्री मनीष त्रिपाठी	बी.ए. भाग-दो
	सुश्री बेबी यादव	बी.ए. भाग-दो
	सुश्री मंजूलता शर्मा	बी.ए. भाग-दो

बागवानी समिति

प्रभारी	डॉ. प्रदीप राव	प्राचार्य
सदस्य	सुश्री आरती गुप्ता	बी.ए. भाग-तीन
	सुश्री सत्या प्रजापति	बी.ए. भाग-तीन
	श्री राकेश यादव	बी.ए. भाग-तीन
	श्री रणविजय कुमार गुप्ता	बी.काम. भाग-तीन

खेल समिति

प्रभारी	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	प्राध्यापक
सदस्य	श्री सुजीत कुमार सिंह	बी.ए. भाग-एक
	श्री सतीश गौड़	बी.एस-सी. भाग-दो
	श्री राम प्रताप पाल	बी.ए. भाग-एक
	श्री शंकर निषाद	बी.ए. भाग-एक
	श्री अवधेश भारती	बी.ए. भाग-दो

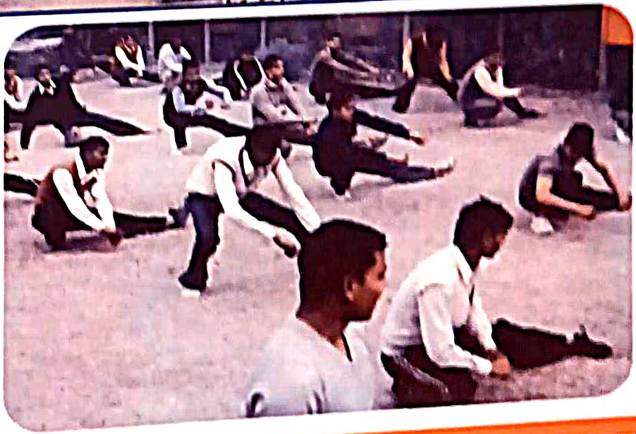

महाविद्यालय परिवार

अध्यक्ष
गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

प्रबन्धक
पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज

प्राचार्य
डॉ. प्रदीप राव

डॉ. विजय कुमार चौधरी	प्रभारी	भूगोल विभाग
डॉ. रघुबीर नारायण सिंह	प्रभारी	प्राणि विज्ञान विभाग, प्रभारी कार्यालय
डॉ. स्नेहलता त्रिपाठी	प्रभारी	वनस्पति विज्ञान विभाग, प्रभारी, शिक्षक-अभिभावक समिति
डॉ. शिवकुमार बर्नवाल	प्रभारी	रसायन शास्त्र विभाग, संयोजक प्रवेश एवं परीक्षा नियंत्रक
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	प्रभारी	राजनीतिशास्त्र विभाग, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो, क्रीड़ा प्रभारी
डॉ. शालिनी सिंह	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र, प्रभारी विज्ञान संकाय
श्री लोकेश कुमार प्रजापति	प्रभारी	प्राचीन इतिहास, कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो, सांस्कृतिक कार्यक्रम
श्रीमती कविता मध्यान	प्रभारी	अंग्रेजी विभाग, प्रार्थना एवं स्वच्छता
श्री पुरूषोत्तम पाण्डेय	प्रभारी	अर्थशास्त्र विभाग, मुख्य नियन्ता
श्री संतोष कुमार	प्रभारी	भौतिक विज्ञान विभाग, पुस्तकालय तथा सूचना एवं परामर्श
डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	प्रवक्ता	वनस्पति विज्ञान विभाग, प्रभारी प्रयोगशाला
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार	प्रवक्ता	भूगोल विभाग, प्रभारी कला संकाय
श्री प्रकाश प्रियदर्शी	प्रभारी	समाजशास्त्र विभाग
डॉ. राजेश शुक्ला	प्रभारी	वाणिज्य विभाग, सूचना एवं जनसम्पर्क
श्री सत्यप्रकाश सिंह	प्रवक्ता	प्राणि विभान विभाग, प्रभारी प्रयोगशाला
डॉ. आरती सिंह	प्रभारी	हिन्दी विभाग
श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	प्रभारी	गणित विभाग, सूचना एवं परामर्श
श्री मनोज वर्मा	प्रवक्ता	गणित विभाग
श्री नन्दन शर्मा	प्रवक्ता	वाणिज्य विभाग, प्रभारी वाणिज्य संकाय
श्री सुभाष गुप्ता	प्रवक्ता	वाणिज्य विभाग, प्रभारी छात्रावास
डॉ. मनीषा कपूर	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र विभाग
श्री ज्ञानेश्वर सिंह	प्रवक्ता	भौतिक विज्ञान विभाग
डॉ. राजेन्द्र तिवारी	प्रवक्ता	सांख्यिकी विभाग
डॉ. बी.बी. मिश्र	प्रवक्ता	रसायन शास्त्र विभाग
श्रीमती अनिता सिंह	प्रशिक्षक	बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र
श्रीमती बविता गौड़	प्रशिक्षक	बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र

चतुर्थ श्रेणी

श्री ओम प्रकाश	परिचर
श्री रामरतन	परिचर
श्री विश्वनाथ	परिचर
श्री जोगिन्दर	परिचर
श्री शिवशंकर	परिचर
श्री धर्मवीर	माली

ग्रन्थालयी

श्री शिव प्रसाद शर्मा

तृतीय श्रेणी कर्मचारी

श्री सुभाष कुमार, कार्यालय प्रमुख
श्री लक्ष्मीकान्त दूबे, कार्यालय सहायक
श्री संजय कुमार शर्मा, कम्प्यूटर आपरेटर, क्रीड़ा सहायक
श्री प्रदीप यादव, प्रयोगशाला सहायक, वनस्पति विज्ञान विभाग
श्री शिव सहाय श्रीवास्तव, प्रयोगशाला सहायक, भूगोल विभाग
श्री संतोष श्रीवास्तव, प्रयोगशाला सहायक, भौतिक विज्ञान
श्री ब्रह्मदेव मिश्र, प्रयोगशाला सहायक, रसायन शास्त्र
श्री राम उमेश साहनी, प्रयोगशाला सहायक, प्राणि विज्ञान विभाग

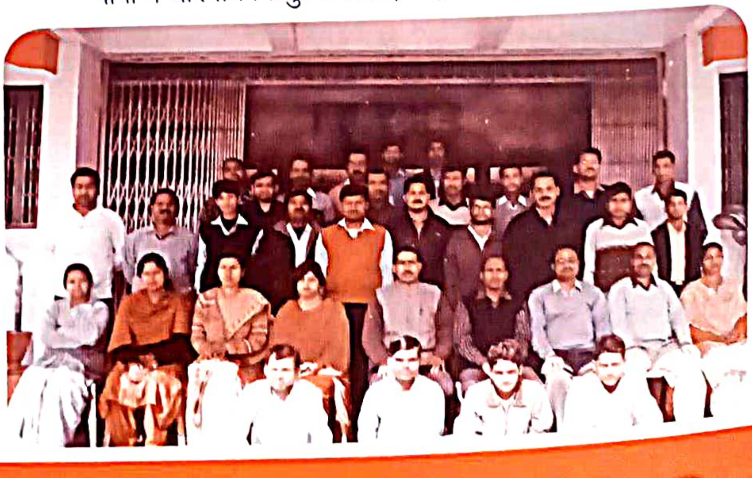

हमारे प्रयास

- प्रातः प्रार्थना एवं वन्देमातरम् के साथ महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ।
- 16 जुलाई से स्नातक/ स्नातकोत्तर द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- 1 अगस्त से स्नातक/ स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- 16 अगस्त से प्रयोगशालाएं शुरू।
- छात्रसंघ का चुनाव 31 अगस्त त…
- प्रवेश समिति में छात्र-छात्राएँ एव…
- छात्र, छात्राओं, प्राध्यापक, कर्म… ।
- सप्ताह में एक दिन छात्र-छात्राओं…
- छात्र-छात्राओं का मासिक मूल्यां…
- महाविद्यालय प्रशासन में छात्र-… — … योगशाला, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्या…
- प्रत्येक सोमवार एवं कार्यक्रमों में…
- छात्र-छात्राओं द्वारा शिक्षकों का…
- 30 जनवरी तक पाठ्यक्रम पूर्ण।
- विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा।
- विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में … — … त्र सुविधा, प्रवेश समिति की सदस्यता, उन… जाना।
- शिक्षकों द्वारा छात्र-छात्राओं को गोद लेने की प्रक्रिया।
- सत्र में दो बार शिक्षक-अभिभावक बैठक।
- प्रतिवर्ष अगस्त माह में साप्ताहिक दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला।
- नवम्बर माह में शोध व्याख्यान प्रतियोगिता।
- प्रतिवर्ष 'विमर्श' नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन।
- प्रत्येक सत्र में राष्ट्रीय संगोष्ठी/ कार्यशाला का आयोजन।
- ग्रमीण महिलाओं के स्वालम्बन हेतु बाबा गम्भीर नाथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर (उ.प्र.)-273014
कृपया ध्यान दें -
1. पुस्तक खो देने, फाड़ देने या बरबाद कर देने पर पाठक को उसके बदले में नयी पुस्तक देना होगा या पुस्तक का दोगुना मुल्य देना होगा।
2. आवश्यकतानुसार पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा निर्गमित पुस्तक को किसी भी समय लौटाने के निर्देश का पालन अनिवार्य होगा।
हमें पुस्तक का उसी प्रकार उपयोग करना चाहिए जैसे मधुमक्खी पुष्प का करती है, वह मधु संचित कर लेती है, किन्तु इसे क्षति नहीं पहुंचाती .. (काल्टन)
पुस्तकें साफ एवं सुरक्षित रखें।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

समावर्तन उपदेश

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि।

तैत्तिरीय उपनिषद् 1.11

"सत्य बोलना। धर्म का आचरण करना। स्वाध्याय में प्रमाद न करना। आचार्य की दक्षिणा दे लेने पर सन्तति-उत्पादन की परम्परा विच्छिन्न न करना। सत्य से न हटना। धर्म से न हटना । लाभ कार्य में प्रमाद न करना। महान् बनने के सुअवसर से न चूकना। पठन-पाठन के कर्त्तव्य में प्रमाद न करना। देवता और पितरों के कार्य (यज्ञ और श्राद्ध आदि) से प्रमाद न करना। माता को देवी समझना। पिता को देवता समझना। आचार्य को देवता समझना। अतिथि को देवता समझना। अन्यान्य दोष-रहित कार्यों को करना।"

संकल्प

मैं .... पुत्र/पुत्री श्री/श्रीमती ....

स्नातक कला/विज्ञान/वाणिज्य में इस महाविद्यालय से अपनी शिक्षा पूर्ण कर रहा/रही हूँ।

- मैं संकल्प लेता/लेती हूँ कि उपर्युक्त समावर्तन उपदेश का पालन करूँगा/करूँगी।
- जीवन में शुचिता एवं ईमानदारी के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करूँगा/करूँगी।
- मैं भारत का एक योग्य नागरिक बना रहूँगा/बनी रहूँगी। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति मेरी निष्ठा रहेगी।
- मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूँगा/करूँगी जिससे राष्ट्रीय एकता-अखण्डता को चोट पहुँचे।
- मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूँगा/करूँगी जिससे मेरे माता-पिता तथा सगे-सम्बन्धियों की कीर्ति धुमिल हो।
- भारत की सनातन संस्कृति में मेरी अटूट निष्ठा बनी रहेगी।
- भारतीय जीवन मूल्यों का सम्मान करते हुए उसके संवर्धन हेतु सदैव प्रयत्नशील रहूँगा/रहूँगी और अपने व्यक्तिगत जीवन में उनका पालन करूँगा/करूँगी।

हस्ताक्षर प्राचार्य

हस्ताक्षर छात्र/छात्रा